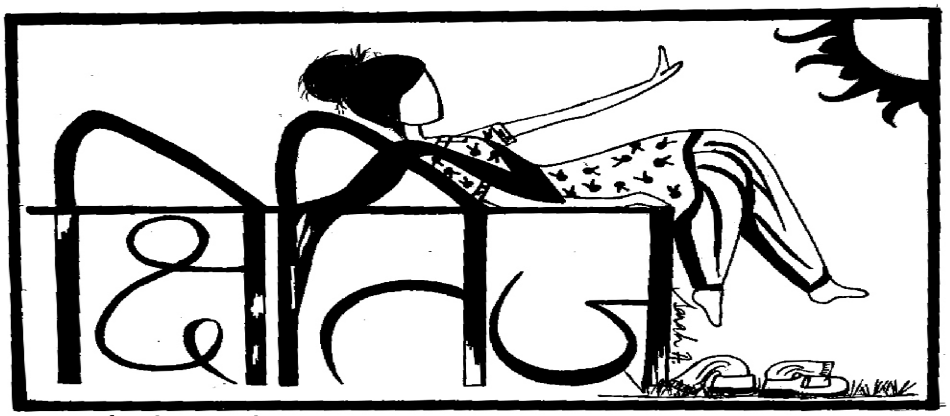

आर्त्त शान्तिः फला विद्या
वैल्हम गर्ल्स स्कूल, देहरादून
वर्ष 16, संख्या–1, फरवरी 2016

इस अंक में आगे है......

- पृष्ठ 1 : संन्यास, हमें आप पर गर्व है
- पृष्ठ 2 : तुम जीओ हजा़रों साल, संपादिका की कलम से
- पृष्ठ 3 : जिजीविषा को सलाम, नई प्रतिभाएं, बेटी के भारत माँ से प्रश्न
- पृष्ठ 4 : मैगी–मैगी–मैगी, एक मुलाकात
- पृष्ठ 5 : हम आपको भूल न पाएँगे
- पृष्ठ 6 मन की बात, परीक्षा की प्रतीक्षा, तुम समय की रेत पर छोड़ते चलो निशाँ
- पृष्ठ 7 : आँचल डेरी, ताजपोशी, शुक्रिया, वर्षों का साथ
- पृष्ठ 8 : वह समय जो तय हुआ, सम्पादकीय दल

संन्यास

दुनिया में दो चीज़ें हैं जिन्हें कोई नहीं रोक सकता– एक है समय और दूसरी है हर साल होने वाली बोर्ड की परीक्षाएँ। विद्यार्थियों का इन परीक्षाओं के साथ जो संघर्ष होता है, ऐसा घमासान युद्ध तो पांडवों और कौरवों में भी नहीं हुआ होगा। आपको इस बात पर यकीन करने में शायद थोड़ी दिक्कत हो, पर यह वर्ष का वह विचित्र समय है, जब वैल्हमाइट्स भोजन से ज़्यादा अपनी पुस्तकों के पन्नों को चाटना पसंद करती हैं।

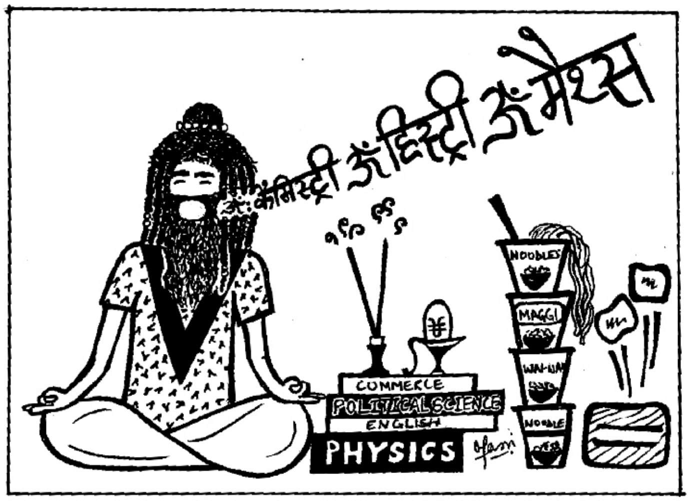

पर मुझे कहना पड़ेगा, दसवीं से अधिक ये बात बारहवीं कक्षा के लिए उचित है क्योंकि जहाँ बारहवीं कक्षा की छात्राएँ पूरे वर्ष भोजनालय के 'घी–तेल रहित' भोजन को प्रसाद मानकर 'डाइटिंग' करती हैं, वहाँ दसवीं की छात्राएँ बोर्ड की परीक्षाओं के लिए मिले हुए खाने–पीने के सामान को गणेश जी के लड्डू समझकर खाती ही रहती हैं। किस विषय को कब पढ़ना हैं , इसके स्थान पर ये योजनाएँ बनती हैं कि कब क्या खाना चाहिए! पर इसके लिए कोई उन्हें दोष भी नहीं दे सकता क्योंकि दसवीं में ही आप 'साइज़ ज़ीरो' बनने के सपनों को सूप, रस्क और चीज़स्प्रैड के ख्वाबों के नीचे दबाकर भूल सकते हैं और किसी प्रकार के अपराधबोध से ग्रसित भी नहीं होते!

दसवीं और बारहवीं कक्षा की छात्राओं को पहचानने में बस दो मिनट लगते हैं। जिनके नेत्र रात–भर जागने के कारण लाल हो गए हों और जिनके चेहरों पर जीवन से बिल्कुल ऊब जाने वाले भाव हों। वैसे तो ऐसी लड़कियाँ पूरे विद्यालय में फैली हुई होती हैं और भूतों की तरह मंडराती रहती हैं पर एक जगह जहाँ आपको बोर्ड की कक्षाओं की दस–बीस वैल्हमाईट्स अवश्य दिख जाएँगी – वह है बास्केट बोर्ड कोर्ट। यही वह जगह है जहाँ वैल्हमाईट्स का ध्यान लगता है!

परंतु वैल्हम गर्ल्स स्कूल की अनोखी 'संन्यासिनियाँ ' केवल दसवीं और बारहवीं कक्षा की छात्राएँ ही नहीं हैं , उनके साथ अन्य वैल्हमाईट्स को भी सुबह से लेकर शाम तक मौन व्रत रखना पड़ता है ताकि 'वे ' पढ़ सकें, और ये बात तो सभी जानते हैं कि वैल्हमाईट्स के लिए अपना मुँह बंद रखना कितना कठिन कार्य है।

– तारा कात्यायिनी सिंह
मुख्य सम्पादिका
कक्षा – ग्यारह

हमें आप पर गर्व है

बास्केटबॉल के प्रशिक्षक एवम् क्रीडा विभागाध्यक्ष श्री विनोद वच्छानी द्वारा लिखित लेख एवम् 'प्ले', विख्यात अमेरिकन बास्केट बॉल मैगज़ीन 'विनिग हूप्स', जिसका मुख्य कार्यालय स्पार्टा, मिशिगन, अमेरिका में स्थित है, में गत बीस वर्षो से प्रकाशित हो रहे हैं। इनका पहला 'प्ले' 1996 में प्रकाशित हुआ था। वही 'प्ले' 1997 में ' टॉप फोर्टी कोचस ऑव द वर्ल्ड ' में भी प्रकाशित हुआ था।

क्षितिज को श्री विनोद वच्छानी द्वारा प्राप्त इस उपलब्धि पर गर्व है!
हमारी ओर से श्री विनोद वच्छानी को ढेरों बधाइयाँ!

तुम जीओ हज़ारों साल

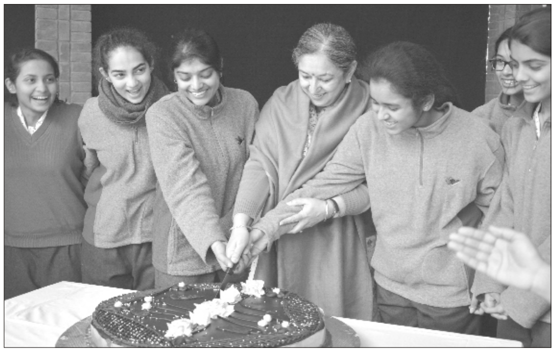

इस वर्ष छः फरवरी को विद्यालय का जन्मदिन बड़ी धूमधाम से मनाया गया । कक्षा ग्यारह की छात्राओं ने विद्यालय के जन्मदिन के उत्सव का बहुत सुन्दर आयोजन किया था। विद्यालय के जन्मदिन पर जिन खेलों का आयोजन किया गया था वे बहुत मनोरंजक और नए थे। ' पेपर डान्स ' द्वारा कक्षा छः और बारह की छात्राओं की दूरियाँ नज़दीकियों में बदल गईं। पलक (दिव्यांशी अग्रवाल) और गुत्थी (जैसिका बिरदी)ने कक्षा सात की छात्राओं को परेशान करके दर्शकों का भरपूर मनोरंजन किया। आँखों पर पट्टी बाँधकर कक्षा आठ की छात्राओं द्वारा किया गया श्रृंगार भी कम हँसाने वाला नहीं था। कक्षा ग्यारह की छात्राओं के 'सेव यौर बलून' नामक खेल को देखकर दर्शकों के पेट में हंसते–हंसते दर्द हो गया। बारहवीं कक्षा का 'ट्रेज़र हंट' उत्साह से परिपूर्ण था। बास्केटबॉल मैच में महिला अध्यापिकाएँ धोती पहनकर बनी पुरुष, और पुरुषों ने किया चुनौती से इन्कार, बजा ढोल और जीती महिलाएँ। 'रस्साकसी' में बारहवीं की छात्राओं ने कक्षा ग्यारह की छात्राओं को चारों खाने चित्त करके अपनी शक्ति का परचम लहरा दिया। इसके पश्चात् प्रधानाचार्या जी ने मंच पर आकर विद्यालय के नए कप्तान, क्रीड़ा कप्तान, विभिन्न सदनों के कप्तानों एवम् आफिशियल्स के नामों की घोषणा की तथा केक काटकर सभागार में उपस्थित सभी छात्राओं, अध्यापिकाओं एवम् गणमान्य अतिथियों को शुभकामनाएँ दीं।

– गितिका कर्वा
–कक्षा – नौ

संपादिका की कलम से...

प्रिय पाठकगण,

वर्ष 2016 के 'क्षितिज' के प्रथम अंक को प्रकाशित करते हुए मुझे बड़ी खुशी हो रही है और इस बात का भी गर्व है कि हिन्दी भाषा में छात्राओं की रुचि दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। मैं प्रधानाचार्या श्रीमती ब्रार व उपप्रधानाचार्या श्रीमती दत्ता को धन्यवाद कहना चाहती हूँ कि उन्होंने मुझे 'क्षितिज' का उत्तरदायित्व सम्भालने के योग्य समझा।

'क्षितिज' के इस अंक व भविष्य में प्रकाशित होने वाले कई अंकों के माध्यम से मैं विद्यालय को हमारी राष्ट्रभाषा, हिन्दी का महत्व व उसकी खूबसूरती से अवगत कराना चाहती हूँ। अपने पाठयक्रम का अंश समझकर हम हिन्दी भाषा व उसके साहित्य की सुन्दरता को भुला देते हैं। मुख्य संपादिका होने के नाते मेरा कर्त्तव्य विद्यालय की छात्राओं को इस बात का एहसास कराना है कि हिन्दी भाषा का हर शब्द कितना अनोखा और पवित्र है। अपने मनोभावों को जिस खूबसूरती के साथ व्यक्त करने की शक्ति अपनी राष्ट्रभाषा में होती है, उतनी संसार की किसी दूसरी भाषा में नहीं होती।

इस अंक में विद्यालय से सम्बंधित रोचक समाचारों के साथ कुछ गंभीर मुद्दों पर वैल्हमाइट्स के विचार भी शामिल हैं। मैं प्रार्थना करती हूँ कि कक्षा दस व बारहवीं की कक्षा की छात्राओं को सरस्वती जी का आशीर्वाद मिले और वे अपनी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करें। आशा है कि इस साल 'क्षितिज' का प्रयोग, वैल्हमाइट्स अपनी किताबों को सजाने के स्थान पर उनमें प्रकाशित लेखों को पढ़ने में करेंगी और उसकी लेखिकाओं ,कलाकारों व सम्पादक मंडल को प्रोत्साहित करने का प्रयत्न करेंगी।

शुभकामनाओं सहित –

तारा

तारा कात्यायिनी सिंह

जिजीविषा को सलाम !

सियाचिन ग्लेशियर भारत–पाकिस्तान के बीच स्थित नियंत्रण रेखा (एल.ओ.सी.) के उत्तर–पूर्व में स्थित है। दिलचस्पी की बात तो यह है कि एक साल में सियाचिन पर जितना पैसा सरकार खर्च करती है– उससे साल भर में 4000 सेकेंडरी स्कूल अथवा अगले 30 सालों में 1.72 लाख स्कूल बनाए जा सकते हैं। पिछले तीस सालों में 33 अफसरों समेत 879 सैनिकों की मौत सियाचिन में हुई है। इनमें से अधिकांश मौतें हिमस्खलन और बीमारियों के कारण हुई हैं।

ऐसा ही कुछ 3 फरवरी 2016 को हुआ– दुनिया के सबसे ऊँचे युद्धक्षेत्र सियाचिन में हुए हिमस्खलन में 10 जवान फँस गए। छः दिन बाद इनमें से एकमात्र जीवित लांस नायक हनुमनथप्पा कोप्पड़ को गंभीर हालत में ज़िंदा निकाला गया। उनका – 55 डिग्री सेल्सियस पर बर्फ में 35 फीट नीचे दबकर ज़िंदा रहना किसी चमत्कार से कम नहीं था। एक किलोमीटर चौड़ी और 800 मीटर ऊँची बर्फ की दीवार गिरने पर शेष नौ सैनिकों की मौत हो गई।

डाक्टरों का कहना है कि हिमस्खलन के वक्त वह शायद अपने टेंट में रहे होंगे, इसलिए उन्हें गर्मी मिल सकी। एयर पॉकेट में रहने की वजह से उन्हें ऑक्सीजन भी मिल सका, किंतु छः दिन पानी के बिना वह कैसे रह पाए, यह एक रहस्य है। जब उन्हें अस्पताल पहुँचाया गया, तब वह कोमा में थे और उनकी किडनी काम नहीं कर रही थी। डॉक्टरों की कड़ी मेहनत के बाद और पूरे देश की दुआओं के बावजूद उन पर दवाइयों का कोई असर नहीं हुआ।

आखिरकार, 11 फरवरी 2016 को, सुबह पौने बारह बजे उन्होंने अपनी आँखें सदा के लिए बंद कर लीं।

सियाचिन के नौजवानों को क्षितिज का सलाम!

– सुप्रिया जवरानी
कक्षा–ग्यारह

बेटी के भारत माँ से प्रश्न

माँ पहले तो तूने मुझे लक्ष्मी माना,
फिर क्यों अब अपने दिल से निकाला?
कहती थी चाँद सी मेरी परी,
पर अब मुझे चाँद पर लगा दाग माना !
माँ , क्यों माँ, क्या गलती है मेरी माँ ?
माँ ऐसा क्यों हुआ माँ ?
पहले मेरी आँख में एक भी आँसू आता ,
तो तेरी धड़कन थम जाती ।
पर अब जब रो रही लगातर मैं
तो क्या तेरा दिल न पिघल आता ।
क्या हुआ माँ तेरी ममता को?
क्यों बन गई इतनी कठोर तू ?
क्या तुझे मेरे आँसू तक नहीं दिख रहे माँ ?
माँ , क्यों माँ , क्या गलती है मेरी माँ ?
माँ ऐसा क्यों हुआ माँ?
कभी बनी इंदिरा, मैत्रेयी ,गार्गी
क्यों कोसते हैं लोग कहकर मुझे अभागी ?
माँ ,मेरी भारत माँ , कभी मैं ही थी तेरा सम्मान ,
फिर क्यों झेलती हूँ आजकल इतना अपमान ?
ना मेरी लाडली परी न ,
नहीं मैं रहना चाहती बनकर बस बेटों की माँ !
मेरी प्यारी परी तू नहीं जानती यह सब देखकर
अंदर ही अंदर क्रोध से भर जाती हूँ।
अफसोस है कि मैंने कुछ ऐसी संतानों को पैदा किया
जिन्होंने कर दिया हैं मेरी लाडली परी का यह हाल।
पर आज भी करती सच्चे दिल से तेरे लिए दुआ।
हाँ! लेकिन आश्वस्त रह बेटी,
धैर्य बनेगा तेरा सम्बल,
शिक्षा बनेगी ढाल और तेरा असीम आत्मबल।
फिर दिलाएगा महत्व तुझे आत्मसम्मान।
जल्द ही वह दिन आएगा
जब होगा मेरी लाडली परी का सिर्फ सम्मान ।
माफ कर देना माँ कि तुझे इतना गलत समझा
पर अब वादा है तेरी बेटी का
अपने इन आँसुओं को व्यर्थ न जाने दूँगी
अंगारे बनाकर अपने अंदर समेट लूँगी
समाज की निष्ठुरता से अकेले लड़ जाऊँगी
और ज़रुरत पड़ी तो दुर्गा तक बन जाऊँगी !
पर तेरे इस विश्वास को टूटने न दूँगी माँ !
माफ कर देना माँ कि तुझे इतना गलत समझा!

- माही मित्तल
कक्षा-नौ

नई प्रतिभाएँ

30 जनवरी 2016 को हमारे विद्यालय से पाँच छात्राएँ डॉ.गिरिजा शंकर त्रिवेदी की स्मृति में आयोजित हिन्दी काव्यपाठ समारोह में भाग लेने के लिए ओ.एन.जी.सी. आफिसर्स क्लब में गई थीं। हमारे विद्यालय की ओर से कक्षा नौ की माही मित्तल और कक्षा दस की दिव्या बिजलवान की स्वरचित कविताओं को काव्यपाठ के लिए चुना गया था। माही को तृतीय पुरस्कार एवम् दिव्या को प्रोत्साहन पुरुस्कार प्राप्त हुआ। सौनिका भारद्वाज, गौरी अग्रवाल और रागिनी केयाल की कविताओं की भी निर्णायकों ने बहुत प्रशंसा की।

क्षितिज की ओर से इन सभी छात्राओं को ढेरों बधाइयाँ !

मैगी–मैगी–मैगी

इक दिन हमसे रुठ गई थी
हमसे अलविदा कह गई थी
दादी–नानी, चाची–मामी
सब की लाडली छिन गई थी
मैगी–मैगी–मैगी
जी हाँ , मैगी–मैगी–मैगी!
रजत जयन्ती मना वो चुकी थी
नेता–अभिनेता को भा वो चुकी थी
हाय! किसकी नज़र लगी थी उसको
लगा दाग उसके आँचल पर
बदनाम हुई–बदहाल हुई
इज़्जत उसकी तार–तार हुई
कितनी जाँच कितनी फरियाद
किसी से न बची मैगी की लाज़
दिन बीते महीने बीते
हो गया करोड़ों का नुकसान
किसी के घर की रोटी छिन गई
मैगी पॉइन्ट जो हुआ उदास
मैगी ला दो जब भी कहते
मम्मी हमें आँख दिखाती
दिमाग की कमी का बोध कराती
पर, दिल खुश हुआ आज फिर से
क्लीन चिट हो आई जब से
चलो, स्वागत करें मैगी का
खाएँ मैगी दिन और रात
फिर से करें मैगी को दुलार
जुग–जुग जीए हमारी मैगी हर बार!

– कामना बगई
कक्षा–दस

एक मुलाकात

श्री एस.के. शर्माजी की हमारे विद्यालय में एथलैटिक्स कोच के पद पर नियुक्ति हुई है। हम उनका हार्दिक स्वागत करते हैं। श्री शर्माजी इससे पूर्व पंद्रह वर्ष तक भारतीय वायु सेना में कार्यरत थे। प्रस्तुत हैं उनसे बातचीत के कुछ अंश –

दिव्यांशी : आपके अनुसार जीवन में स्वास्थ्य व तंदरुस्ती का क्या महत्व है ?
श्री एस.के. शर्मा : स्वास्थ्य के बिना ज़िन्दगी का कोई मतलब ही नहीं है । मनुष्य धन–सम्पत्ति के बिना जी सकता है, परन्तु अस्वस्थ रहकर कोई नहीं जी सकता। इसलिए जीवन में तंदरुस्ती बहुत महत्वपूर्ण है ।
दिव्यांशी : वैल्हमाईट्स की तंदरुस्ती के विषय में आपका क्या विचार है ?
श्री एस.के. शर्मा : तंदरुस्ती के मामले में तो वैल्हमाईट्स सर्वोत्तम हैं! जहां तक देहरादून की बात है, वैल्हम की छात्राएँ क्रीड़ाओं की तरफ बहुत उत्साह व दिलचस्पी दिखातीं हैं। अन्य विद्यालयों में खेलों व क्रीड़ाओं की तरफ ज़्यादा ध्यान दिया ही नहीं जाता है। वैल्हमाईट्स को नई चीज़ें सीखने की जिज्ञासा रहती है।
दिव्यांशी : क्या आपको लगता है कि वैल्हमाईट्स बहुत बातूनी हैं ?
श्री एस.के. शर्मा : नहीं, नहीं!! ज़्यादा बातूनी नहीं हैं। थोड़ी बहुत बातें तो सब करतें हैं। मैंने कई विद्यालयों के छात्र देखे हैं, लेकिन उनकी तुलना में वैल्हमाईट्स बहुत आज्ञाकारी हैं।
दिव्यांशी : आपका अभी तक का वैल्हम का अनुभव कैसा रहा है ?
श्री एस.के. शर्मा : बहुत मज़ा आ रहा है! वैसे तो अभी कुछ ही दिन बीते हैं, लेकिन अभी से ऐसा लग रहा है कि मैं इस पाठशाला का हिस्सा बन गया हूँ। विद्यार्थी बहुत ही उत्साहित हैं व सहकर्मी बहुत ही सहयोग दे रहे हैं।

दिव्यांशी अग्रवाल
कक्षा – ग्यारह

क्षितिज की ओर से नम्बर छः को
‘रूप परिवर्तन पुरस्कार’ प्रदान किया जाता है

हास्पिटल या होटल?

सर्दियों में वैल्हम के हास्पिटल में होटल की सुविधाएँ पाएँ!

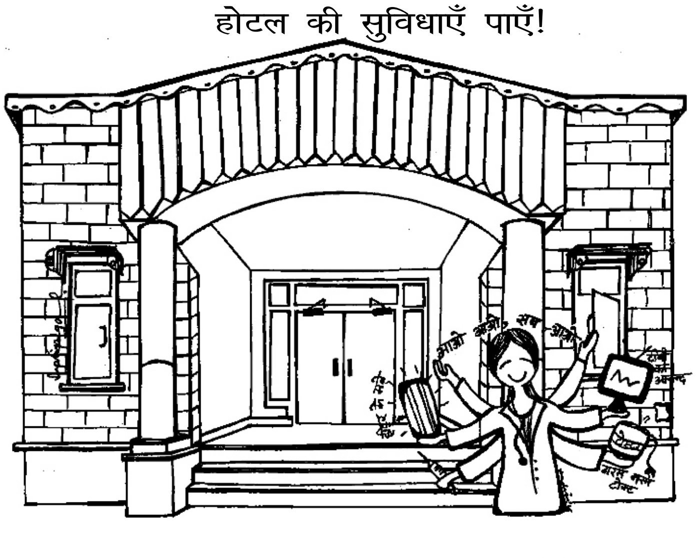

हम आपको भूल ना पाएँगे...

श्रीमती ज्योत्स्ना ब्रार

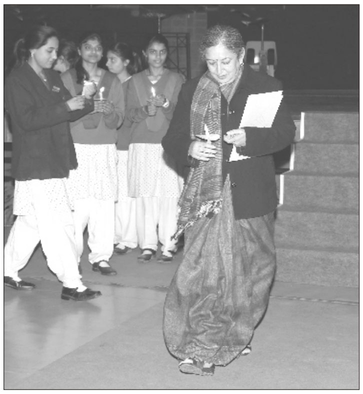

कर्मठता की अवतार,
प्रेरणा का भंडार।

श्रीमती विजयलक्ष्मी जुगरान

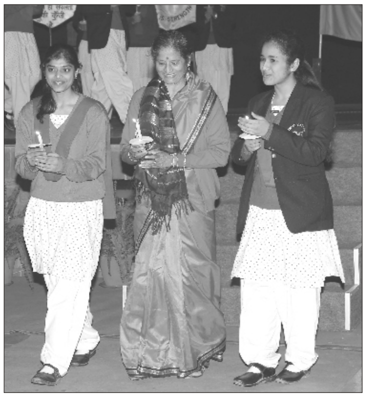

उनासी में आरम्भ,
अनुभवों का स्तंभ।

सुश्री परमजीत कौर

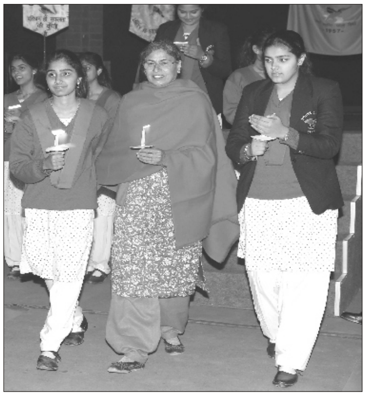

किताबों की हैं वे करोड़पति,
हम सब कहते उन्हें बुद्धिमती।

श्रीमती शशीबाला चक्रवर्ती

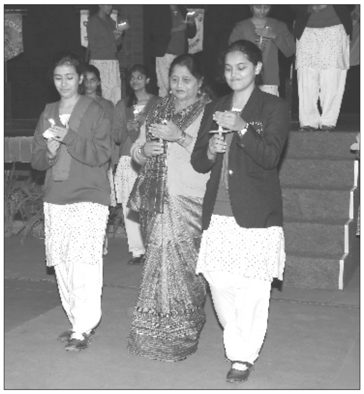

कहते उन्हें पंजाब की शेरनी,
पसंद हैं उन्हें बटर चिकन और फिरनी।

श्रीमती मनोरमा नेगी

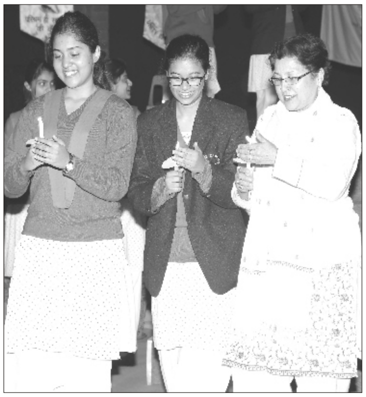

हर महफ़िल की शान,
हैं वे 'फोक डान्स' की जान।

सुश्री ज़ोहरा निज़ामी

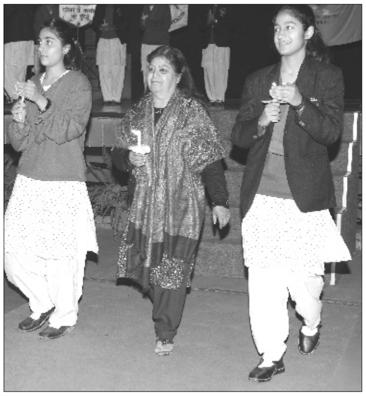

हथेली से करें जो जादूगरी,
उनकी लाजवाब कलाकृति व कारीगरी।

श्री जगबीर सिंह

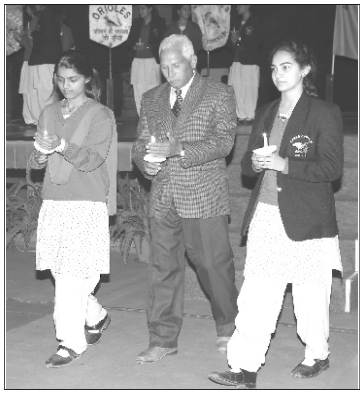

अनुशासन करते प्रदान,
विद्यालय को कराते विश्राम सावधान।

श्री अनिल शर्मा

श्री जे.पी. डंगवाल

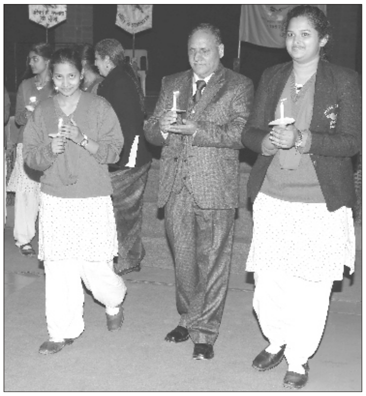

एक का है मेस पर राज दूसरे करते ऑफिस का काम–काज,
दोनों की अभिनय कला पर है हमको नाज़।

मन की बात

क्षितिज' के माध्यम से मैं 'वैल्हम परिवार' के प्रति आभार प्रकट करती हूँ कि मुझे आप सबने विद्यालय के कप्तान के पद का उत्तरदायित्व सम्भालने के योग्य समझा। मैं सभी को विश्वास दिलाती हूँ कि मैं अपनी ज़िम्मेदारी को पूरी निष्ठा एवम् लगन से निभाऊँगी। मैं सबसे पहले कक्षा बारह और दस की छात्राओं को बोर्ड की आगामी परीक्षाओं के लिए शुभकामनाएँ देना चाहती हूँ और आशा करती हूँ कि सभी छात्राओं को उत्तम अंक प्राप्त होंगे।

मैं 'क्षितिज 'के संपादकीय दल को इस अंक के प्रकाशन के लिए के लिए बधाई देना चाहती हूँ। साथ ही मैं विभिन्न सदनों के कप्तानों और सभी ऑफिशियलों को भी मुबारकबाद देना चाहूँगी। मुझे भरोसा है कि सभी छात्राएँ अपना काम पूरी लगन से करेंगी और विद्यालय की उन्नति में पूर्ण सहयोग देंगी। मैं आशा करती हूँ कि नए शिक्षा सत्र में आयोजित होने वाली अन्तर्सदनीय नृत्य प्रतियोगिता और अन्तर्विद्यालयीय वाद–विवाद प्रतियोगिताओं में हमारा प्रदर्शन सर्वोत्तम रहेगा। मैं छात्राओं से यह अपेक्षा करती हूँ कि वे विद्यालय के सभी क्षेत्रों में परिश्रम करने के साथ–साथ अनुशासन पर भी ध्यान देंगी। अनुशासन व नियम पालन द्वारा मार्ग की रुकावटें अपने आप दूर हो जाती हैं।

शुभकामनाओं सहित,

– वंशिका सावला

(स्कूल कैप्टन)

परीक्षा की प्रतीक्षा

आ गए वही पुराने दिन,
फिर पढ़ना पढ़ेगा खेले बिन।
कुछ लोगों का सबसे बड़ा डर सामने आएगा,
हमारी सारी खुशियों को भगाएगा
चौबीस घंटे करनी पड़ेगी पढ़ाई,
गुरु तो क्या विधि को भी दया नहीं आई!
लिखते–लिखते थक जाते हैं हाथ,
और पढ़ाई में भला कौन देगा आपका साथ ?
कभी–कभी हो जाते हैं पास,
परन्तु अंक ना आते खास,
कभी न होना तुम उदास।
फिर भी कभी हार ना मान,
हो सके तो रख लेना अपने माता–पिता का सम्मान।
लेकिन करते रहो अपनी परीक्षा की प्रतीक्षा
क्योंकि तभी तुम कर सकोगे अपनी काबिलियत को साबित,
चाहे वो हो हिन्दी, भूगोल, अँग्रेज़ी या गणित।

– शरण्या गर्ग

कक्षा –सात

तुम समय की रेत पर छोड़ते चलों निशाँ...

सितम्बर 1986 में पेन ऐम. फ्लाइट 73 के अपहरणकर्ताओं का सामना करके कराची के हवाई अड्डे पर सीनियर फ्लाइट पर्सर, नीरजा भनोट ने अपना बलिदान देकर हज़ारों यात्रियों की जानें बचाईं उनकी स्मृति में हर साल नीरजा भनोट पेन ऐम. ट्रस्ट ऐसी महिलाओं को डेढ़ लाख रुपए, एक प्रशस्ति पत्र और एक ट्रोफी के साथ पुरस्कृत करता है जो सामाजिक अन्याय से लड़कर स्वयं को व दूसरी महिलाओं को बचाती हैं।

2003 में एक्स–वैल्हमाइट शिवानी गुप्ता को यह पुरस्कार मिला था। बाइस साल की उम्र में, एक कार दुर्घटना ने उनकी रीढ़ की हड्डी में गहरी चोट लगी जिस कारण उनका अपने पैरों पर चलने का सपना सदा के लिए चकनाचूर हो गया। अपनी पूरी ज़िन्दगी वे अस्वीकृति, अनचाही दया व जीवन में हतोत्साहित करने वाले अवसरों से कोई–ना–कोई शिक्षा लेती गईं और कभी भी अपनी विकलांगिक स्थिति को उन्होंने अपना दुर्भाग्य नहीं समझा। पर जब उनके पति विकास परलोक सिधार गए, तब वे अपने पीड़ित मन में सोचतीं कि उन्होंने अपने जीवन में कौनसा इतना बड़ा पाप किया था कि उनके साथ विधाता ऐसा भयंकर अन्याय कर रहा था। कुछ समय बाद वे अपनी उदासी से बाहर निकलीं अपने जीवन को –'एक्सिस ऐबिलिटी' के द्वारा दूसरे विकलांगों को राहत पहुँचाने के काम में लगा दिया । शिवानी के लिए उनका काम अपने पति विकास को श्रद्धांजलि देने के समान था।

शिवानी गुप्ता की आत्मकथा 'नो लुकिंग बैक' हमारे विद्यालय के पुस्तकालय में मौजूद है।

क्षितिज की ओर से हम 'नीरजा भनोट' एवम् उनके नाम पर आरम्भ किए गए पुरस्कार से सम्मानित एक्स–वैल्हमाइट 'शिवानी गुप्ता' के जज़्बे को सलाम करते हैं।

– तारा कात्यायिनी सिंह

कक्षा – ग्यारह

आँचल डेरी

मानव ने जीवन के हर क्षेत्र में कितनी उन्नति कर ली है। आधुनिक समय में हमें हर प्रकार की सुविधा प्राप्त है। 'बटन दबाओ– पंखा! बटन दबाओ – ए॰सी॰! बटन दबाओ – दूध ही दूध!'

11 फरवरी 2016 को कक्षा ग्यारह की अर्थशास्त्र (इकनॉमिक्स) की छात्राएँ एक शैक्षिक यात्रा के लिए 'आँचल डेरी' गई थीं। हमारे साथ श्रीमती डंडोना, श्रीमती जैन, श्रीमती गुप्ता व श्रीमती अग्रवाल गई थीं। 'आँचल डेरी' उत्तराखंड की सहकारी दुग्ध उत्पादन सोसायटी है। यह देहरादून के रायवाला में स्थित है। वहाँ हमें दूध एवं उसके पोषक तत्वों के विषय में जानकारी के साथ सहकारी दुग्ध सोसायटी की कार्यप्रणाली को समझने का भी अवसर मिला।

'आँचल डेरी' में दूध के उत्पादन की विधि वैज्ञानिक है। इससे दुग्ध की गुणवत्ता बढ़ती है। हमने वहाँ दूध का ए.टी एम. भी देखा। दूध के ए.टी.एम. की गाड़ी गली–गली, ज़िले–ज़िले में दूध की बिक्री करती है। उस यंत्र में अपनी ज़रुरत के अनुसार दूध की मात्रा भरो, पैसे भरो और दूध पाओ। ज्ञानवर्धक यात्रा होने के साथ–साथ सबसे रोचक बात यह थी कि हमें अंत में खाने के लिए मसालेदार पनीर तथा पीने के लिए मट्ठा भी मिला! रोज़ाना दूध पीने का महत्त्व हमें अब पता चला है।

– आकांक्षा अग्रवाल
कक्षा– ग्यारह

सूर्य की चुम्बकीय शक्ति

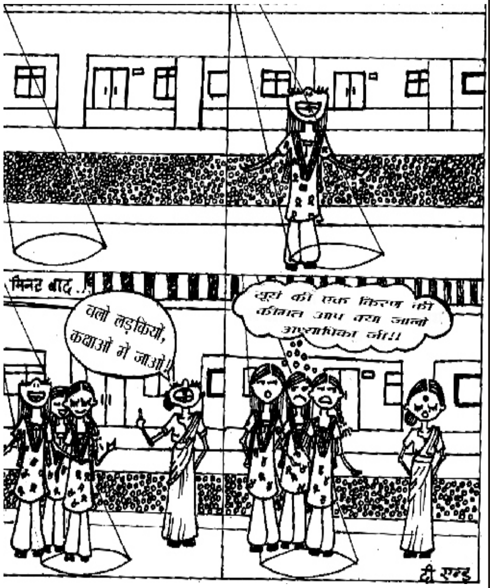

ताजपोशी

6 फरवरी 2016 को विद्यालय के जन्मदिन की संध्या के समय नए कप्तानों के लिए शपथग्रहण समारोह का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम का आरम्भ संस्कृत के एक श्लोक से किया गया। फिर प्रधानाचार्या जी ने नए और पुराने कप्तानों को मंच पर शपथ ग्रहण के लिए बुलाया। सबसे पहले स्कूल की कप्तान वंशिका सावला और क्रीडा की कप्तान सैरा चौधरी ने अपने कर्त्तव्य को पूरी निष्ठा एवम् लगन से निभाने की प्रतिज्ञा ली। उनके बाद पाँचों सदनों के कप्तानों (ईशिता दीवान, आकाँक्षा नैथानी, मानिनी चौधरी, नेमत खुराना और शौर्या सिंह) ने वेल्हम के हित में कार्य करने का प्रण लिया।

तत्पश्चात् मुख्य अतिथि आई.पी.एस. ऑफिसर श्रीमति अभिलाषा बिष्टजी ने कक्षा बारह की उन छात्राओं का 'स्कूल कलर्स' प्रदान किए जिन्होंने क्रीड़ा,अध्ययन और अन्य गतिविधियों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया था। पंद्रह वर्षो में पहली बार प्रधानाचार्या जी ने स्वयं ' प्रिंसिपल्स अवार्ड' इशरत हंस, सौम्या रतन और सिमरन अग्रवान को प्रदान किए। इस कार्यक्रम के अन्त में कक्षा बारह की छात्राओं ने जगमगाती हुई मोमबत्तियाँ कक्षा ग्यारह की छात्राओं को प्रदान कीं और इन्हीं जगमगाती हुई मोमबत्तियों द्वारा विद्यालय की कमान नए कप्तानों व कक्षा ग्यारह की छात्राओं को अर्पित का दी।

नया दौर है, नई उमंगें, अब है नई कहानी,
युग बदला ,बदलेगी नीति, बदलेगी रीति पुरानी।

– चाँदनी गर्ग
कक्षा – ग्यारह

शुक्रिया

'शुक्रिया' करना चाहती हूँ
उन 'शुभचिंतकों' का
जिन्होंने मुझे जीना सिखाया
जीवन में कितना लोग गिर सकते हैं
उसका 'लाईव टेलिकास्ट' दिखाया ।
सारा 'श्रेय' उन्हीं शुभचिंतको को
जिन्होंने मेरा आत्मविश्वास बढ़ाया ।
भक्त बन चुकी हूँ उन्हीं की
जिन्होंने मुझे इतना काबिल बनाया ।
अगर अब कोई पूछता है ,
जीवन में क्या खोया क्या पाया ,
तो बेशक कहती हूँ –
'' जो खोया वो मेरी नादानी थी ,
जो पाया वो शुभचिंतकों की मेहरबानी थी।
जाते – जाते वो ऐसी निशानी दे गए
सारी उम्र याद रखने की कहानी दे गए ।
अब तो शायद प्यास भी
नहीं लगेगी जीवन भर
आँखों में इतना पानी दे गए।''

– दिव्या बिजलवान
कक्षा –दस

वर्षों का साथ

आ गया है वह दिन, वह बिछड़ने वाला दिन,
टूट रहे हैं लोगों के दिल,
छूट रहा है सालों का साथ,
कई कीमती आँसू इस धरतीं पर
गिरने वाले हैं आज।
आ गया है वह समय वह घड़ी
दिल में हैं अरमान कई
पूरे करने को आगे बढ़ना है अभी
कई ख्याल है, कई ख्वाब हैं,
कई यादें हैं इस छोटे से ज़हन में कैद,
कई लड़ाई की, कई डाँट की,
कई छुट्टियों की तैयारी की,
चीखने चिल्लाने की ,खुशियाँ मनाने की,
डर है इन मासूम दिलों में,
नई जगह होगी कैसी ?
दिल टूट रहा है, आज मेरे यार,
बिछड़ रहा है सालों का साथ ,
फिर भी बाँधी हमने एक पक्की डोर,
क्योंकि हमारे प्यार का,
न कोई ओर है,न कोई छोर ।

–सान्या जैन
कक्षा – आठ

वह समय जो तय हुआ...

विद्यालय, विद्यार्थी तथा अध्यापक, अध्ययन और अध्यापन, ये एक ही सिक्के के दो पहलू होते हैं। एक दूसरे के पूरक होते हैं और एक–दूसरे के जीवन से इतनी घनिष्ठता होती है कि उसका अन्त समझना मुश्किल होता है और उससे अलग होकर अपना अस्तित्व महसूस करना और भी मुश्किल होता है! कब छात्राओं का समय निकलता है, कब वे बड़ी हो जाती हैं। शिक्षिकाओं को तब पता चलता है जब वे अपने बच्चों के साथ विद्यालय में आकर कहती हैं,"मैम! मैं हूँ! पहचाना?" और तब लगता है कि समय बहुत दूर निकल गया है। पर अपने बारे में कुछ नहीं सोचती हूँ क्योंकि स्वयं वहीं बैठी हूँ तो समझा कि मेरे लिए तो समय थमा हुआ है।

अब फरवरी का महीना है और 31 मार्च को यही क्षण मेरे जीवन में आ जाएगा। सन् 1979 नवम्बर में कुछ छात्राओं को पढ़ाने आने वाले कदम सैंतीस वर्षों बाद ठहर जाएँगे। भगवान का तथा मेरे बड़ों का आशीर्वाद है। विद्यालय में मुझ से बड़ी श्रीमती पण्डित, श्रीमती नैथानी, श्रीमती खन्ना और नाम लिखते हुए लम्बी कतार को छोड़कर आगे बढ़ती हूँ कि,इसी तरह हम उम्र सहयोगी श्रीमती ब्रार, श्रीमती देयिता दत्ता, श्रीमती डंडोना आदि–आदि के सान्निध्य में समय कब निकला, पता ही नहीं चला।

प्रधानाचार्या सुश्री सरोज श्रीवास्तव, श्रीमती शान्ति वर्मा और फिर श्रीमती ज्योत्स्ना ब्रार को पाकर व्यक्तित्व के विकास की सीढ़ियाँ चढ़ी और कब जाने–अनजाने अपनी परछाई, अपनी पढ़ाई, सिखाई, सहलाई छात्राओं में पाई।

जहाँ हम 37 वर्ष बिताते हैं वहाँ आप अपने को उस घर का सदस्य समझते हो और फ़िर उस घर में आपके जीवन का हर क्षण बीतता है– कभी सुख– कभी दुख, कभी प्यार–कभी इकरार सभी की अभिव्यक्ति भी तो यहीं होती है – मेरे जीवन का हर क्षण वेल्हम गर्ल्स के आँचल की छाँव में बीता है मैं इससे अलग होने की सोच से ही सिहर जाती हूँ। परन्तु जाना है– इस घर, इस आश्रय को छोड़कर कहाँ– क्या ऐसा ही कुछ कहीं और भी होगा–असम्भव–कहीं नहीं, कभी भी नहीं। अब इन अंतिम पंक्तियों में मैं अपनी उन छात्राओं से क्षमा चाहूँगी जिनके भविष्य की अति अधिक चिन्ता या फ़िर अपना एकाधिकार समझकर उनको रोका, टोका, बोला। अपनी सहकर्मियों से भी यही कहूँगी कि जब वृक्ष बूढ़ा हो जाता है तो उसे अधिक आवश्यकता होती है सरसता की और वह मुझे आप लोगों से मिली, आप लोगों का अपनापन, प्यार, दुलार ही तो हर क्षण आँखों में आँसू बनकर टपकता है कि अब इन सब से अलग होना है।

अन्जानों से क्या दामन बचाएँ, अब तो
जाने–पहचानों से ही दामन छूट रहा है।
क्या बयाँ करे उस घुटन का,
जिसके बारे में सोचते ही दम घुट जाता है!

विद्यालय की छत्रछाया सबको मिले, सभी के लक्ष्य पूर्ण हों। सभी को यह विद्यालय अपना घर लगे और सब सुखी, सम्पन्न, स्वस्थ रहें। इसी कामना व मनोकामना के साथ लेखनी को विराम देती हूँ।

– श्रीमती विजयलक्ष्मी जुगरान
विभागाध्यक्षा (हिन्दी)

विशेष सहयोग
सुश्री परमजीत कौर
श्रीमती सीमा सागर

और अब चलते चलते...

श्रीमती वनश्री स्कॉट एवं श्रीमती रीमा पंत को क्षितिज की ओर से **'ग्रीन गर्ल्स'** का पुरस्कार प्रदान किया जाता है।